नानाजी देशमुख

11 अक्तूबर, 1916 की शरद पूर्णिमा को महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र के परभणी जिले के हिंगोली तालुका के कडोली गाँव में अमृतराव देशमुख की धर्मपत्नी राजाबाई की कोख से एक पुत्र ने जन्म लिया। शिशुकाल में ही नाना माता-पिता की स्नेहछाया से वंचित हो गए। नाना के पालन-पोषण का भार बड़े भाई आबाजी देशमुख पर आ पड़ा। नौ वर्ष की आयु तक नानाजी 'क ख ग' भी नहीं पढ़ पाए, पर विधाता ने उन्हें कुशाग्र बुद्धि दी थी, जिसके बल पर वे बड़ी बहन के पास रिसोड़ में आठवीं कक्षा तक प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान पाते रहे। रिसोड़ में ही नानाजी का संबंध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से स्थापित हुआ। नियति उनकी जीवन की दिशा तय करने लगी। मैट्रिक तक की पढ़ाई के लिए उन्हें वाशिम आना पड़ा, वहीं 1934 में डॉक्टरजी ने 17 स्वयंसेवकों को संघ की प्रतिज्ञा दी। 1939 में राजस्थान के पिलानी बिड़ला कॉलेज में अध्ययन के लिए गए।

वर्ष 1940 में वे संघ की प्रथम वर्ष शिक्षा के लिए नागपुर गए। वहाँ उन्होंने डॉ. हेडगेवार को असाध्य बीमारी से जूझते देखा। उनके अंतिम भाषण को सुना। उन्होंने पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर संघ का पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनने का निश्चय कर लिया। 15 अगस्त, 1940 को केवल 14 रुपए जेब में लेकर गोरखपुर के लिए रवाना हो गए। कुछ दिन धर्मशाला में काटे। अपनी व्यवहार कुशलता से एक ओर उन्होंने महंत दिग्विजय नाथ, गीता प्रेस के संस्थापक भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार, कांग्रेसी नेता बाबा राघवदास जैसे प्रतिष्ठित और बड़े लोगों से संपर्क बनाया। 12 जुलाई, 1949 को संघ पर से प्रतिबंध उठने पर नानाजी ने 'स्वदेश' पुन: प्रकाशित कराने की तैयारी शुरू कर दी। जनसंघ में 1951 से 1961 तक नानाजी का कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश रहा। दीनदयाल जी की स्मृति में 'दीनदयाल शोध संस्थान' की स्थापना की। जनता पार्टी के विघटन और जे.पी. के निधन से व्यथित नानाजी ने दल और वोट की सत्ता-राजनीति से पूरी तरह मुँह मोड़ लिया। अद्‌भुत कल्पनाशक्ति, संगठन-कुशलता व योजकता और साधन-संग्रहक की पूंजी लेकर वे रचनात्मक क्षेत्र में कूद पड़े।

94 वर्ष लंबे जीवन काल में राष्ट्र-जीवन के अनेक क्षेत्रों में अपने कर्तृत्व का डंका बजाया। दक्षिण में बीड से उत्तर में गोंडा जिले तक विकास के अनेक रचनात्मक प्रकल्पों की शृंखला खड़ी की, किंतु उनमें कहीं पर भी नानाजी का नाम नहीं है, नानाजी का चित्र नहीं है, हर जगह उन्हीं के चित्र और नाम हैं, जिनसे उन्होंने जीवन में कभी भी प्रेरणा पाई। डॉ. हेडगेवार, गोलवलकर 'गुरुजी', दीनदयाल उपाध्याय, जयप्रकाशजी और प्रभावतीजी आदि-आदि। 27 फरवरी 2010 को अपनी कर्मभूमि चित्रकूट में चतुष्पुरुषार्थ का यह जीवंत मॉडल इस संसार से महाप्रयाण कर गया और उनकी वसीयत के मुताबिक उनकी देह दिल्ली के एम्स में समर्पित कर दी गई।